प्रत्यूष पाण्डेय

एक समय की बात है।

अथ एक समय की बात है नाम की कृति का प्रारंभ।

अथ एक समय की बात है नाम की कृति के देवों का दंभ और त्रिपुर वध वाले अध्याय का प्रारंभ।

एक समय की बात है, जब महिषासुर, दुर्गामादि का देवी के हाथों से कल्याण हो गया था तो त्रिलोक में शांति छा गयी थी। इस शांत एवं खुशनुमा वातावरण में इन्द्रादि देवगण देवी को भूल से गए थे। देवो में तो इस तरह का गलत विचार आ गया था की उनकी मदद से ही माँ ने असुरों वा राक्षसों का संहार किया है। अगर उन देवताओ ने शस्त्र आदि देवी को भेट न दिये होते तो देवी की विजय अनिश्चित थी। ऐसा सोच देवो में घमंड आ गया और वे देवी की सत्ता से अनासक्त हो गए।

ये सब देख मरुतो को अच्छा न लगा उन्होंने देवो से देवी की शक्ति को समझने को कहा। जब कोई बच्चा अपनी माँ को कुछ खिलौना बना के देता है तो उसका मतलब ये नहीं की वो माँ से ज्यादा शशक्त है। देवो द्वारा दी गयी शक्ति वा शस्त्र भी तो माँ की ही शक्ति थी। परन्तु मरुतो की बात का देवो पर तनिक फर्क न पड़ा और वो भोग विलास में लिप्त रहे।

मरुतो ने फिर देवगुरु बृहस्पति से गुहार लगायी। गुरु ने बोला की , “हे मरुतो, तुम इन देवो की चिंता छोडो, ऐसा पहली बार नहीं हुआ है की इन देवो ने परम शक्ति की मदद को भूल अपनी तुच्छ शक्तियों पर दंभ भर लिया हो। वक्त आने पर ये पुनः माँ के पास रोते हुए जायेंगे।“

मरुत बोले, “है देव गुरु ऐसा पहले कब हुआ था हमें बताये और उसका क्या निष्कर्ष निकला था?”

गुरु बोले, “त्रिपुर संहार के समय भी इन देवताओ को अपनी शक्तियों पर दंभ हो गया था, जिसे में यहाँ संछेप में बतात हूँ।“

देवी शक्ति स्वरूप शिवांश कार्तिकेय द्वारा त्रिपुरासुर के वध के बाद उसके तीनो पुत्र जो शिव शक्ति भक्त तथा ब्राह्मण एवं वेदों का अनुसरण करने वाले थे को तीनो पुर का स्वामित्व मिला। वे पुर क्रमशः सोना, चाँदी और लोहे के थे।

बड़े पुत्र के यहाँ सांख्य योगियों का परचम था। मझले के यहाँ न्याय वैशेशिकियो का दर्शन फल फूल रहा था। छोटे के यहाँ मीमंसा वेदांती ब्राह्मणों के सदेव जमघट लगा रहता था। तीनो भाई शाश्त्र, वेदांग, लोकायत आदि में निपुण थे। सबकी बुद्धि कुशाग्र थी और तीनो पुरो के लोग प्रसन्न थे। परन्तु इंद्र को ये बर्दाश्त न हुआ। तीनो असुर आखिर एक स्वर्गलोभी पिता के संतान थे और वे सब अति बलशाली भी थे। इंद्र को भय था की ये तीनो भी स्वर्ग पर चढाई न कर दे? उसने इनका खात्मा करने की योजना बनाई।

परन्तु शिव शक्ति के भक्त को ख़त्म कैसे कर सकते हैं? फिर ब्रह्मा ने उन्हें वर दिया था की वे केवल पशुपतिनाथ के हाथों मर सकते है वो भी तब जब तीनो पुर सीधी रेखा में हो और सिर्फ एक ही प्रहार से।

इंद्र भगवन विष्णु के पास गए। विष्णु ने छीका और एक सर मुड़ा लाल कपडा पहने असभ्य भाषा बोलता हुआ पाखंडी निकला। “मेरे शरण में आओ, संघ के शरण में आओ। दुनिया नकली है, सिर्फ संघ असली है। आत्मा नहीं है, विश्व भी नहीं है, कर्म है पुनर्जन्म है पर सब नकली है।

दुःख है दुःख है दुःख है।" ऐसी अनर्गल बातें करने वाले से भगवन ने कहा "जाओ पुत्र, तुम्हारा मिथ्या धर्म सांख्य का पतित रूप है। तुम जाकर स्वर्णनगरी को पतित करो।" वह पाखंडी फिर वहा से चला गया।

विष्णु ने फिर खासा, और एक स्वेत वस्त्र धारी, मुह बांधे और झाड़ू लिए हुए एक पाखंडी परकत हुआ। "वेद अर्धसत्य है। परन्तु उसमे से में कुछ बताऊ क्या? विश्व एक पुरुष है, स्त्री को मोक्ष नहीं। कर्म एक गन्दगी है। पहले लोग पहाड़ जैसे बड़े थे। खुद को कष्ट दे कर संसारिक कष्टों से दूर हो जाओ। बिना खाए पिए मरने वाले मोक्ष प्राप्त करते है।"

"है मुनि अश्रेष्ठ जाओ तुम चांदीपुर को पतित करो"

फिर विष्णु ने डकार ली, एक मदमस्त आदमी प्रकट हुआ " खाओ पियो ऐश करो मित्रो, जिनदगी फिर कभी आये न। वेद असत्य है, ब्रिहदारंयकोपनिषद मेरी बात मानता है। किसी की कही नहीं माननी चाहिये ऐसा मेने सुना है। सिर्फ देखि मनो बाकि ज्ञान न जानो। खाओ पियो ऐश करो मित्रो, जिनदगी फिर कभी आये न।"

"वह क्या मधुर बोलता है" विष्णु हँसे, "जाओ पुत्र जाओ तुम लोहगढ़ को अपवित्र करो।"

फिर वो तीनो पाखंडी अपने अपने स्थान पर वेद विरोधी अधर्म का प्रचार करने लगे। तीनो असुरो का भी धर्म पतित हो गया और फिर वह लोगो पर भी बोझ बन गए। छोटा शराब वा स्त्रीयो में लिप्त हो गया और अपना कर्म भूल गया। मझला दिन रात अनर्गल व्रत रखने लगा। राज पथ से उन्मुक्त हो चला। बड़ा तो निर्वाण की लालच में लाल पाखंडी की

मूर्ति पे मूर्ति बनाने लगा और यज्ञ आदि पर पाबंधी लगा दी। जब लोग उन्हें समझाने गए की कृपया अपना पाखंड लोगो पर न थोपे तो उन्होंने उन लोगो को मानसिक वा शारीरिक प्रतारणा दी। अन्ततोह्गत्वा तीनो पुरो के लोगो ने ही देवो से अनुरोध किया की वे उनके पुरो पर आक्रमण करे।

परन्तु भले ही तीनो भाइयो का धार्मिक पतन हो चूका था फिर भी ब्रह्मा जी द्वारा दिये गये वरदान के कारण उनका वध किसी अन्य देव के हाथो होना मुश्किल था। फिर देवगण आदि भगवान पशुपतिनाथ के पास गए। “भगवान्” वे सब बोले, “ब्रह्मा जी के वर के कारण सिर्फ आप ही उन तीनो पापियों का वध कर सकते है, कृपया करें”

शिव मुश्काराए, वे बोले - “इंद्र के कपट व छल से मेरे तीन पुत्रों का धर्म भ्रष्ट हो गया है, शिर्फ़ इतना ही नही उन्होंने लोगो पर अत्याचर किया है। मैं जगत कल्याण के लिए उनका वध करने को तैयार हूँ” फिर तो देवताओ में हर्ष आ गया। ब्रह्मा तुरंत एक रथ प्रस्तुत किये और खुद सारथि बन बैठे, विष्णु तीर का रूप लेकर पिनाक पर चढ़ गए। और अन्य देवता भी, कोई रथ के पहिये का कील, कोई छाता कोई घोडा आदि बनकर तैयार हो गए। फिर जब तीनो पुर एक सीध में आये तो इश्वर ने प्रत्यंचा चढाई। तीर कमान में चढ़ाया और तीनो पुरो की और निशाना लगाया। नंदी आदि गण पुरो को खली करवा चुके थे। देवताओ को लगा की अब तीनो पुरो का नाश निश्चित है। ऐसा रथ, ऐसा बाण, ऐसा सारथि पाकर तो कोई भी ये काम कर सकता था।

देवादिदेव देवताओं की मन की बात समझ गए। उन्हें उनकी बात पर हंसी आई। वह मन ही मन जगद जननी के बारे में सोचने लगे जिनके पुत्र अभी भी कितने अपरिपक्व हैं। माँ के बारे में सोचते ही इश्वर के मुख पर मुश्कान छिड़ गयी। उस तनिक सी मुश्कान ने ही त्रिपुर में प्रलय ला दी। प्रलयंकर की शक्ति देख देवगण चकित हो गए। ब्रह्मा बोले "इश्वर हमें माफ़ करे, हम आपकी शक्ति को समझ न सके। कृपया मेरे द्वारा दिए गए वरदान का आदर करे।"

"ऐसा ही होगा" बोल कर इश्वर ने बाण रूपी विष्णु को छोर दिया और त्रिपुरों का इस प्रकार अंत हुआ।

बृहस्पति से ये वृतांत सुन कर मरुतों को बहुत ख़ुशी मिली। जिस प्रकार इश्वर ने देवो का दंभ चूर चूर किया है उसी प्रकार महेश्वरी भी करेंगी, यह सोच मरुत देवी वंदना करते चले गए।

इति एक समय की बात है नाम की कृति के देवों का दंभ और त्रिपुर वध वाले अध्याय का अंत।

अथ एक समय की बात है नाम की कृति के देवी अवतरण वाले अध्याय का प्रारंभ।

एक बार ब्रह्मा के पास एकादस रूद्र आये और उन्होंने पूछा " पिता जी, हम आपकी भौ से उत्पन पुत्र है। फिर भी इश्वर ने हमारा स्वरुप क्यों लिया हुआ है? वह आपका स्वरुप क्यों नही लिये? क्यों आखिर इश्वर भी रूद्र कहे जाते है?"

ऐसा सुन ब्रह्मा देव मुश्करय, "पुत्रो, मुझे पता है की आप लोग इश्वर स्वरुप ही हो। मुझ पर कृपा करने के लिए ही आप सब ने मेरे कुल में जन्म लिया है वरना आप तो अकुल हो। आपका स्वरुप अत्यंत शिवम् है। आप शिव है। आपको पुत्र रूप में प्राप्त कर में धन्य हूँ। जब आप लोग अवतरित हुए तो आप बहुत रोये। यह शिव लीला ही थी की आपका नाम तब रूद्र पड़ गया"

"पिताजी इश्वर को अकुल क्यों कहा जाता है?"

"इश्वर साश्वत है इसलिए उनका कोई कुल नही"

"साश्वत है यानि कभी पैदा नही हुए तो कभी मरेंगे भी नही फिर लोग क्यों कहते है की श्रृष्टि का आरम्भ इसने किया तो उसने किया।"

"सर्जन का कार्य मेरा है, परन्तु यह शक्ति महेश्वर ने ही मुझे दी है। मेरा काम व्यहवारिक है। जैसे एक स्त्री जन्म देती है। जैसे एक कुम्हार घड़े को जन्म देता है वैसे ही मेने देवादिदेव की शक्ति से प्रकृति को गढ़न किया है।"

“ये देवादिदेव है कोन और इनकी शक्ति कोन हैं?” रुद्रो के इस प्रश्न पर ब्रह्मा जी बहुत खुश हुए। “पुत्रो अब आप वो सुनो जो में हमेशा बताना चाहता हूँ। धन्य हूँ जो आप लोगो ने मुझसे ये पुछा।“

परवर्ती काल में सिर्फ एक थी। वह एक शक्ति स्वरुप थी। उस एकं से ही सम्पूर्ण जगत प्रकट हुआ है और वो एक ही सम्पूर्ण जगत में समां गयीं हैं। उन एक को कोई इश्वर बोलता है कोई बिंदु तो कोई ब्रह्म। वह केंद्र थीं और हैं। उन एक में दो होने का भाव आया तो वह हो गयीं। उनमे से पुरुष उत्पन्न हुआ। जब एकीकरण का रस पता हो तो द्वा में मजा नही आता। शिव को बहुत दुःख हो रहा था। वह रोने लगा। “हे मै एकं के सुख को त्याग यहाँ कैसे पहुच गया? अनंत आनंद को मैंने क्यों छोड़ दिया? में अब फिर एक कैसे होऊ?” एसा कहकर शिव क्रंदन करने लगा। तब आदि पराशक्ति ने त्रिपुर सुंदरी का रूप लेकर महादेव के सामने प्रकट हुईं। “हे इश्वर, हे रूद्र आप क्यों रोते है? आप और में तो एक ही है, सदेव थे और रहेंगे। आप ब्रह्म है, आप मै हूँ और मै आप।“

“है देवी, मुझे ये सब पता है फिर भी अब दो होकर मुझे प्रसंता नही हो रही है। में फिर से सत में विलीन हो जाऊ वैसा रास्ता बताए। देवी, शक्ति और शिव एक है परन्तु आज शक्ति से अलग होकर में शव की भांति अनुभव कर रहा हूँ। मै दुबारा शक्तिमान हो जाऊ कोई ऐसा उपाय बताये।“

“इश्वर, जगत कृति के लिए एवं कल्याण के लिए ही हम अलग हुए हैं। इश्वर, मै जल्द ही अवतरण लेकर आप से मिलूंगी तब तक में आपको इस शरीर में ही एकत्व का भाव लाने वाले ज्ञान का दर्शन काराती हूँ।“

तब देवी ने महादेव को सांख्य-योग एवं ब्रह्मज्ञान आदि दिया। महदेव ज्ञान प्राप्त कर केलाश में समाधी पर चले गए और निरंतर पराशक्ति व अपने वास्तविक स्वरूप के ध्यान में लग गए। इस तेज को लोक गणों ने देखा और नंदी भृंगी आदि गण शंकर के भक्त हो गए। शिव और शक्ति में वस्तुतः कोई अंतर नहीं है। परन्तु जग को सगुन रूप में दर्शाने के लिए ही ब्रह्म शिव और शक्ति में अलग अलग दिखतीं हैं।

ये सुन रुद्रों को काफी सुकून और हर्ष मिला। उन्होंने फिर पूछा। “देव माँ कब जन्म लेंगी? कब देवादिदेव को सम्पूर्णता प्राप्त होगी?”

“पुत्रो सती वा पार्वती के रूप में देवी ने जन्म लिया और इश्वर से एक हुई परंतु महादेवी पार्वती अब फिर देव से अलग हो लीला के लिए मदुरै नरेश मल्विकाध्वाज के यहाँ महारानी कन्चंमाला से जन्म लेंगी।”

ये सुन रुद्रों का बहुत मन हुआ की वे देवी के बाल स्वरुप को देंखे और वो ब्रह्मदेव से आज्ञा ले दक्षिण भारत के मदुरै प्रान्त को चल दिए।

मदुरै प्रान्त के राजा एक बार जंगल भ्रमण को निकले। रस्ते में उन्हें एक स्वर्ण हिरन नजर आया, “यह खुबसूरत हिरण, महल में कितना खुबसूरत लगेगा” एसा सोच रजा उस हिरण को पकरने उसके पीछे चल दिए। हिरण उन्हें एक छोटे से मंदिर के पास ले गया। “ऐसे वन में यह मंदिर कैसे” सोच राजा मंदिर के अन्दर गए। एक अद्भुत शिवलिंग को

देख राजा बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पुरोहित से पूछा मंदिर के बारे में तो उसने उन्हें बताया। “राजन इस मंदिर की कहानी सुनाने का सोभाग्य देने का शुक्रिया”

एक समय की बात है देवराज इंद्र ने छल से असुरो का धर्म पतित किया और संहार किया। फलस्वरूप उन्हें खुद श्रमण पाखंडी हो जगह जगह विचारना पड़ा। यह श्राप उनका इस जगह इस शिवलिंग को देख ख़त्म हुआ। तब देवेन्द्र ने यह छोटा सा मंदिर भगवन सुभंकर का बनवा दिया।

यह सुन राजा मल्याध्वाजा ने मंदिर को विस्तृत करने का वचन दिया और ख़ुशी मन से विदा हुए। उस छोटे से मंदिर का फिर विस्तार हुआ और एक बहुत बड़ा मदिर बना।

सम्पूर्ण जग शिव ही है। शिव का शारीर ही जगत है। शिव नंगे है क्योंकि उनके अतिरिक्त कुछ है ही नही तो फिर वे पहने क्या? शिव को मंदिर आदि में रूचि नही परन्तु जब आस्था से चूंड व्यक्ति सांसारिक पूजा आदि करता है तो शिव को उसकी ये भक्ति अच्छी लगती है।

शिव को राजा की यह भक्ति अच्छी लगी। वह राजा के स्वपन में आये और उनसे वर माँगने को कहा। राजा की कोई संतान न थी, राजा बोले “महाराज में निःसंतान हूँ, जब तक मनुष्य की संतान न हो तब तक वह मोक्ष प्राप्त नहीं करता। प्रभु मुझे संतान सुख का वरदान दे।”

प्रभु बोले, “राजन, संतान तो दत्तक पुत्रो और पुत्रियां भी हो सकती हैं परन्तु तुम्हारी रानी के गर्भ में त्रिपुरसुन्दरी देवी भगवती का अवतरण हो चूका है जो तुम्हे पता नहीं। मल्याध्वाज यह पुत्री ही तुम्हारे पिंड का गौरव होगी

और इसके द्वारा तुमने पितरो का कर्ज उतार दिया है।" यह कहकर इश्वर अताध्र्यान हो गए।

राजा उठकर इस सुस्वपन को सोच बहुत खुश हुए और आतुरता से उस दिन का इन्तेजार करने लगा जब जगद जननी जन्म लेने को थीं।

कन्चंमाला को फिर एक सावली सलोनी लड़की पैदा हुई और पूरी मदुरै में खुशियों की लहर दोड़ गयी। उस मछली के जैसे आँखों वाली सुन्दर बालिका का नाम रक्खा गया मीनाक्षी।

इति एक समय की बात है नाम की कृति के देवी अवतरण वाले अध्याय का अंत।

अथ एक समय की बात है नाम की कृति के देवी की सब लोकों पे विजय वाले अध्याय का प्रारंभ।

मीनाक्षी को देखने ग्यारह अद्भुत ब्राह्मण आये। पहला अद्वैतिन, दूसरा भेदाभेद वेदांती, तीसरा द्वैतिन, चौथा पाशुपत, पांचवा पंचरात्र, छठा शाक्त, सातवा मिमाम्सक, अथवा न्यायिक, नवा वैशेषिक, दसवा सांख्यवादी और ग्यारवा योगी थे। बारी बारी से देवी के रूप को देखा और क्रमशः ये शब्द बोले। “एकं” “ब्रह्म” “भगवती” “इश्वरी” “महामाया” “माँ” “अपूर्व” “प्रथम” “अद्रिस्थ” “प्रकृति” “शक्ति”। एसा कह कर सारे ब्राह्मण वहा से चले गए।

समय के साथ मीनाक्षी के रूप में और निखर आता गया। वह एक अत्यंत ही ज्ञानी और वीर लड़की के रूप में बड़ी हुई। उसका देवीय जन्म राजा रानी भूल से गए और उसके विवाह के बारे में सोचने लगे। अपना देवत्व भी देवी ने भुला दिया था, वह भी खुद को मात्र मदुरै नगर की राजकुमारी ही समझती थीं। परन्तु आकस्मिक ही राजा का निधन हो गया। सर्वसम्मति से मिनाक्षी को मदुरै का उत्तरदायित्व दिया गया। रानी मिनाक्षी को प्रजा बहुत प्यार करती थी। उनका अपनी प्रजा के प्रति वैसा ही भाव था जैसा राजा राम का अपनी अयोध्या के लोगो से। मिनाक्षी एक कुशल और दयाप्रिय रानी थीं।

अक्सर लोग ममता और दया को कमजोरी समझाते है। मदुरै के निकट के प्रान्त भी उसको कमजोर समझाने लगे। अतः उनोहने मदुरै पे हमला कर दिया। तंजोर, चोल आदि राज्यों की संयुक्त शक्ति भी लेकिन मदुरै का बल भी बका न कर सकी। रानी मीनाक्षी युद्ध छेत्र में अपना कौशल दिखा चुकी थी। मदुरै पर अब कोई आँख उठा के भी न देखता था।

लेकिन रानी मिनाक्षी को राज्य विस्तार का कोई लोभ न था। वह संतुष्ट थीं।

एक बार मदुरै में मुनि नारद का आगमन हुआ। नारद मुनि का स्वागत स्वयं रानी ने किया। रानी से खुश होकर नारद मुनि ने उन्हें एसा कहकर सम्भोधित किया, " रानी, आप एक सफल रानी हो। आपके पिता भी एक सफल रजा थे और आपके पूर्वज भी। परन्तु मुझे ये सोच कर कष्ट होता है की आपके जाने के बाद नगर का क्या होगा?"

यह सोच रानी भी व्याकुल हों गयी। अतः उन्होंने विवाह का मन बनाया। नारद मुनि ने उनसे फिर कहा "मदुरैय, अपने लायक ही पति ढूढना।"

"मुनि श्रेष्ठ में भारत वर्ष के सभी राज्यों पे हमला करुँगी, जो मुझसे न हारे में उसी से विवाह करुँगी।" एसा कह कर रानी ने दुसरे प्रान्तों पर कूंच कर दी।

फिर क्या था, चारो तरफ हलचल मच गयी। सारे राजा रानी घबरा गए। कोई लड़ा पर जीत न सका कोई बिना लडे ही हार गया। जब भारतवर्ष में

कोई भी लायक वर न मिला तो देवी उदास हो गयीं। फिर क्या था देवी ने सोचा की अगर भूलोक में नहीं तो क्या, देवलोक में चढाई करके मदुरै के लायक राजा ढूंड लूँ।

देवलोक पर हमला हो गया पर देवों को कोई फरक न पड़ा। देवों ने सोचा की एक मनुष्य हमारा क्या बिगड़ लेगी। उनहोंने पहले गन्धर्वों को भेजा पर गन्धर्व देवी को देख कर ही भाग खड़े हुए तब देवों ने अपना पहला

दल भेजा। देवों का पहला दल भी अच्छी तरह से हार गया फिर स्वयम देवराज इंद्र, अग्नि आदि के साथ देवी से युद्ध करने आये।

देवी की छोटी सी सेना के सामने स्वयं देवराज के साथ समस्त देवसेना थी।

“हे रानी, क्यूँ तुम्हे अपनी जिंदगी से प्यार नहीं है। जानती नहीं है की हम कौन है।” इंद्र बोले।

“देवराज मुझे पता है की आप कोण है। परन्तु में स्वम्वर पर निकली हूँ, मुझे मदुरै के राजा को तो ढूढना ही होगा न?” रानी बोलीं।

चलो इस घमंडी रानी को सबक सिखातें है। ऐसा सोच देव सेना से एक एक कर देव रानी को मरने के लिए बढे। देवी ने उन्हें आराम से हरा दिया। फिर देवराज ने सबको साथ मिल कर हमला करने को कहा, परन्तु देवी खुद देवसेना पर भारी पर रहीं थीं। तब देवराज ने दैवीय शक्तियों का प्रयोग करने का मन बनाया, देवराज ने वज्र चला दिया। देवी मूर्छित हो गयी। तभी क्रोध से देवी के भावों के बीच से रुद्राणी का अवतरण हुआ।

रुद्राणी को देख देवगणों में हलचल मच गयी। बड़ी आँखों वाली, घुंघराले लम्बे बाल, समहा स्वेतवर्ण वाली, भस्म लगाये और हाथी की तरह चीघारती देवी को देख देवता दर गए। अग्नि देव ने आग फेंकी पर रुद्राणी ने उसे फूक से उड़ा दिया। वरुण देव का सारा पानी पी लिया और इंद्र के वज्र को निगल गयीं। सारे देवतागण घबडा गए और विष्णु का स्मरण किया। विष्णु चक्र लिए प्रकट हुए।

“देव” इंद्र बोले, “हमारी रक्षा करें। हम से फिर भूल हो गयी है।”

विष्णु मुश्कुराए और देवी से मुखातिब हुए।

देवी हंसी “आओ पुत्र आओ” वह बोलीं।

कमलनयन ने बोला “पुत्र! में तो स्वयंभू हूँ देवी, में आपका पुत्र कैसे?”

फिर विष्णु ने अपने सारे अश्त्र इस्तेमाल कर लिए पर देवी के सामने सब बेकार गए। तब विष्णु ने छल करने की सोंची। वे देवी को हतोशाहित करने के लिए बोले, “देवी आप भूल गयीं? आप मेरे ही शक्ति है। में ब्रह्म हु और आप माया प्रकृति। आप मेरी ही रूप है। आरम्भ में केवल मैं ही था। फिर मेरे वाम अंग से महालक्ष्मी का जन्म हुआ। वह महालक्ष्मी ही शक्ति हैं। देवी क्या आप भूल गयीं कैसे मैंने आपके सती स्वरुप को अपने सुदर्शन से छिन्न किया था?”

“विष्णु” देवी बोलीं, “आपको ये भ्रम कैसे हो गया? में आपको सही बात बताती हूँ”

फिर देवी ने विष्णु को सत्य का ज्ञान कराया।

“आरम्भ में न सत था न असत, फिर हिरण्यगर्भ का उद्भव हुआ। विष्णु वह हिरण्यगर्भ मेरा ही था। मेने ही महालक्ष्मी, महासरस्वती का रूप लिया। विष्णु, आप सहित त्रिदेब मेरी ही उत्पत्ति हैं।”

पर विष्णु मानने को तैयार न हुए। “देवी, अब आप मेरे से युद्ध में जीत जाये तो पता चले।” तो रुद्राणी त्रिशूल और अरसी लेकर विष्णु पे टूट पड़ी और विष्णु भय से इधर उधर भागने लगे।

फिर क्या था, रुद्राणी का भयंकर रूप देख विष्णु को सब याद आ गया। वे बोले, “माता, आप शांत हो जाईये। आप जगत जननी हो, कृपया अपने पुत्र को माफ़ कर दीजिये।”

अपने पुत्र की ये बात सुन कर रुद्राणी शांत हो गयीं।

माँ बोलीं, “विष्णु, तुम्हारी उत्पत्ति मुझसे ही हुई है। मेरी पालक शक्ति का तुम्हारे अन्दर वास है। जगत को रच के मैं जगद में ही समां गयी। जैसे एक नृत्य और नर्तक में सम्बन्ध होता है वैसे ही जगत और मुझमें है। आप में मुझमे भी वस्तुतः कोई अंतर नहीं है कमलनयन।“

“देवी” विष्णु बोले, “आप जगद जननी हो, आप की यह अवतार विवाह के लिए निकली है। मुझे उसके भाई का कर्त्तव्य निभाने दीजिये”

“ऐसा ही होगा” देवी बोलीं।

भगवन विष्णु फिर देवी को प्रणाम कर वापस वैकुण्ठ चाले गए। देवो की पराजय हो गयी और इसी के साथ उनका दंभ भी टूट गया। रुद्राणी अंतर्ध्यान हो गयीं। मीनाक्षी देवी को होश आया तो युद्ध ख़त्म हो चूका था।

इति एक समय की बात है नाम की कृति के देवी की सब लोकों पे विजय वाले अध्याय का अंत।

अथ एक समय की बात है नाम की कृति के शिव शक्ति मिलन वाले अध्याय का प्रारंभ।

अब देवी वापस भू लोक पर आ गयीं। महारानी मिनाक्षी से भेट करने नारद मुनि आये, देवी उदास मन से बोलीं, “मुनिशेष्ट्र, मेरे भाग्य में पति सुख नहीं है।” यह सुन नारद मुनि बोले, “रानी बिना प्रयत्न के आप हार गयीं?”

“परन्तु मुनिवर मेने समस्त लोकों में विजय प्राप्त कर ली है, अब मेरे लायक कोई है ही नहीं।”

“परन्तु आपने कैलाश विजय न की” नारद मुस्कुराये।

“कैलाश तो एक पर्वत है, उस स्थान पर कौन राजा कौन प्रजा।” देवी बोलीं।

“ठीक है देवी फिर ये में आप पे छोड़ता हूँ।”

देवी मिनाक्षी ने सोचा, अगर नारद मुनि कह रहे हैं तो जरुर कैलाश पर भी आक्रमण कर देना चाहिए। मदुरै की सेना उत्तर की तरफ कूंच कर गयी।

“समस्या प्रभु समस्या” चिल्लाते हुए भूत गण नंदी के पास पहुंचे। “क्या भवा?” नंदी जी ने पूछा।

“का बताई नंदी जी, एकोह देवी न जाने क्यूँ कैलाश पर हमला कर दिहिन अहे”

“तो का, जा जाकर सामना करा” नंदी बोले।

भूत गण आदि देवी के सामने विकराल रूप लिए पहुंचे पर देवी को देख भयभीत हो गए और हर कर वापस आ गए।

फिर नंदी भृंगी आदि भी लड़ने गए पर देवी को देख वह भी चकित हो गए।

“माता आप केऽ हईं?” उन्होंने पूछा।

“मैं मदुरै की रानी मीनाक्षी हूँ। नारद मुनि के आग्रह पर मेने कैलाश पर आक्रमण किया है।”

यह सुन कर नंदी आदि को अजीब लगा की नारद ने ऐसा आग्रह क्यूँ किया। उन्होंने देवी से लड़ना चाह पर जीत न सके। उन्होंने भी हार मान ली।

बात शिव शंकर तक पहुंची। शंकर अचंभित हो गए। आखिर ये कौन स्त्री है जो कैलाश पर हमला कर दी? सोच वे भी लड़ाई पर निकले।

नंदी गणेश कार्तिकेय आदि गण भी उनके साथ थे। उधर देवी की स्त्री - पुरुष की सेना थी। देवी कैलाशपति को देखना चाहती थी। एक सन्यासी को आखिर युद्ध क्या आता होगा? लेकिन एक दुसरे को देख शिव और देवी को जो हुआ उससे सब चकित रह गए।

जिस देवी से कोई न जीत सका उससके हाथों से धनुष बाण शिव को देख कर गिर गए। जो शिव स्वयं प्रलयंकर थे उनके हाथ से भी धनुष गिर गया।

“ओह ये तो देवी है। मैं इन्हें पहचान गया।” शिव बोले।

देवी को भी अपने सही अस्तित्व का ज्ञान हो गया।

दोनों ने एक दुसरे को देखा और हाथों में हाथ दल लिया। ब्रह्मा, विष्णु देवों सहित प्रकट हुए। इंद्र बोले, “माँ हमसे भूल हो गयी, कृपया हमें छमा करें। हम फिर कभी आप को भूल अपनी शक्तियों पर मिथ्या दंभ न करेंगे।” माता मुश्कुरायीं।

“विवाह की तैयारी हो” नंदी चिल्लाये।

विवाह की शुरुआत हुई। विष्णु ने देवी के भाई की भूमिका अदा की। चारो तरफ उल्लास भर गया। शिव और शक्ति फिर एक हो गए थे।

इति एक समय की बात है नाम की कृति के शिव शक्ति मिलन वाले अध्याय का अंत।

इति एक समय की बात है नाम की कृति का अंत।